

सनातन धर्म में साँई पूजा का औचित्य

श्याम शंकर उपाध्याय

पूर्व न्यायाधीश एवं पूर्व विधिक परामर्शदाता
माननीय राज्यपाल, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

1. **‘धर्म’ क्या है?:** भारतीय मनीषियों के अनुसार वह कार्य, व्यवहार, चिंतन व आचरण जो मनुष्य को कल्याण की ओर ले जाता है, उसे ‘धर्म’ कहते हैं। शब्द ‘धर्म’ इस्लाम, ईसाइयत तथा अन्य धर्मों के अनुयायियों द्वारा जिन अर्थों में समझा जाता है, भारतीय चिंतन परम्परा में धर्म उस अर्थ में कभी भी नहीं समझा गया है। समय के साथ किंचित परिवर्तित होते गये ‘सनातन धर्म’ को ही वर्तमान में ‘हिन्दू धर्म’ के नाम से जाना जाता है। हिन्दू धर्म से इतर इस्लाम, ईसाइयत, यहूदी तथा अन्य धर्मों में शब्द ‘धर्म’ का आशय ईश्वर में आस्था एवं विश्वास के प्रकटीकरण के तरीकों अथवा उपासना पद्धतियों से है जबकि हिन्दू धर्म में शब्द ‘धर्म’ का आशय मनुष्य के सद्गुणों, सद्वृत्तियों, श्रेष्ठ आचार-विचार, मानवीय सद्गुणों तथा मनुष्य सहित जीव मात्र के प्रति मैत्री, करुणा एवं सौहार्द आदि के भाव से है। शास्त्रों में विहित तात्त्विक दृष्टि से देखें तो हिन्दुओं द्वारा की जाने वाली विभिन्न प्रकार की पूजा एवं उपासना पद्धतियाँ ‘धर्म’ का पर्याय नहीं है। आस्था, विश्वास एवं उपासना के मामलों में संसार का कोई भी अन्य धर्म ‘हिन्दू धर्म’ जैसी स्वतंत्रता अपने अनुयायियों को नहीं देता है। पूजा, आस्था एवं उपासना के मामलों में हिन्दू धर्म अत्यन्त उदार है और प्रत्येक हिन्दू अपनी आस्था व विश्वास के अनुसार किसी भी देवी, देवता, प्रकृति, साकार, निराकार की उपासना करने के लिये स्वतंत्र है। ‘धर्म’ की परिभाषा देखें:

यतोभ्युदयः निश्च्रेयस सिद्धिः स धर्मः। (कणाद ऋषि)

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥ (मनुस्मृतिः 6.92)

2. **‘सनातन धर्म’ की परिभाषा:** शास्त्रों के अनुसार सनातन धर्म देश और काल के सापेक्ष सतत् विकासमान रहते हुये भी सदा अपने मूल रूप में ही रहता है और इसी कारण सनातन अथवा प्राचीन होते हुए भी नित्य नवीन बना रहता है। उदाहरण के लिए यदि मानव जाति में मनुष्यता, श्रेष्ठ आचार-विचार, सौहार्द, सद्गुण, सद्वृत्ति, करुणा, दया आदि श्रेष्ठ मानवीय गुण वैदिक काल में श्रेष्ठ माने जाते थे तो इन्हें आज भी श्रेष्ठ ही माना जाता है। इसी कारण अपने वाह्य स्वरूप में रूपान्तरित होते हुए भी सनातन धर्म के मूल तत्व ज्यों के त्यों बने रहते हैं। सनातन धर्म वास्तव में सज्जनों का धर्म है जिनमें विनम्रता और परोपकारिता के साथ-साथ जीव मात्र के प्रति मन, वचन और कर्म से करुणा का भाव होता है। सनातन धर्मी संसार में सर्वदा और सर्वत्र विद्यमान रहे हैं। सनातन धर्मी मनुष्य सहित जीव मात्र के प्रति मन, वचन और कर्म से सदा द्रोह रहित रहते हैं। सनातन धर्म की शास्त्रों में दी गई परिभाषा देखें:

सनातनमेनमाहुर्मुताद्य स्यात् पुनर्णवः ।
अहोरात्रे प्रजायेते अन्यो अन्यस्य रूपयोः ॥ (अथर्ववेदः 10.8.23)

अद्रोहः सर्वभूतेषु कर्मणा मनसा गिरा ।
अनुग्रहश्च दानच्च सतां धर्मः सनातनः ॥ (महाभारत-वनपर्वः 297.35)

सर्वकाले सना प्रोक्ता विद्यमाने तनीति च ।
सर्वत्र सर्वकालेषु विद्यमाना सनातनी ॥
(ब्रह्मवैवर्त पुराण : प्रकृति खण्ड : अध्याय : 54)

3. **सुप्रीम कोर्ट के मत में ‘हिन्दू धर्म’:** भारत के उच्चतम न्यायालय ने समय-समय पर विभिन्न वादों में ‘हिन्दू धर्म’ की व्याख्या करते हुये इसे स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। उच्चतम न्यायालय के अनुसार हिन्दू धर्म किसी एक विचार, मत, पन्थ, उपासना पद्धति, देवी, देवता, आराध्य, पुस्तक, गुरु तथा मार्गदर्शक से बंधा हुआ नहीं

है। हिन्दू धर्म का न कोई प्रवर्तक रहा है और न ही किसी शास्त्र अथवा पुस्तक विशेष को हिन्दुओं का धर्म ग्रन्थ होना ही कहा जा सकता है। हिन्दू धर्म वस्तुतः हिन्दू संस्कृति से उत्पन्न हुई एक विशिष्ट जीवन पद्धति है जो विस्तृत कालखण्ड में अनेकानेक चिंतकों, तत्त्वद्रष्टा मनीषियों तथा शास्त्रों आदि के विभिन्न विचारों से अनवरत समृद्ध होता रहा है। हिन्दू धर्म वास्तव में सत्य के खोज की अनन्त यात्रा है जिसका न आदि है, न अन्त और इसीलिये इसे 'सनातन धर्म' भी कहा जाता है। 'हिन्दू' वह है जो अपने को हिन्दू माने। 'हिन्दू' कहलाने अथवा बनने के लिये किसी को किसी विशेष पूजा, उपासना अथवा कर्मकाण्ड आदि सम्पन्न करने की आवश्यकता नहीं है। आस्तिक और नास्तिक दोनों ही हिन्दू हो सकते हैं जबकि यही स्वतंत्रता अन्य धर्मों के अनुयायियों को प्राप्त नहीं है। कई दूसरे धर्मों में नास्तिकों को उस धर्म का अनुयायी होना नहीं माना जाता है जबकि हिन्दू धर्म के विराट् चिंतन में हिन्दू कहलाने के लिये ऐसी कोई बाध्यता नहीं है। हिन्दू, हिन्दू धर्म तथा हिन्दुत्व की उच्चतम न्यायालय द्वारा दी गई परिभाषा एवं व्याख्या को जानने के लिये कृपया निम्नांकित रिपोर्टेड लॉ जर्नल पढ़ने का कष्ट करें :

- (1). आदि सैव सिवचारियारगल एन. संगम प्रति तमिल नाडु राज्य, (2016) 2 सुप्रीम कोर्ट केसेस 725
- (2). डॉ० एम० इस्माइल फारुकी प्रति भारत संघ, (1994) 6 सुप्रीम कोर्ट केसेस 360 (पृष्ठ 442)
- (3). शास्त्री यज्ञपुरुषदासजी प्रति मूलदास भण्डारदास वैश्य, ए. आई.आर. 1966 सुप्रीम कोर्ट 1119
- (4). बाल ठाकरे प्रति प्रभाकर काशीनाथ कुन्टे, ए.आई.आर. 1996 सुप्रीम कोर्ट 1113
- (5). कमिश्नर ऑफ वेल्थ टैक्स, मद्रास प्रति स्व० आर. श्रीधरन, (1976) सप्लीमेन्टरी सुप्रीम कोर्ट रिपोर्टर 478 (संविधान पीठ)
- (6). डॉ० रमेश यशवन्त प्रभू प्रति श्री प्रभाकर काशीनाथ कुन्टे, ए. आई.आर. 1996 सुप्रीम कोर्ट 1113

4. **सनातन धर्म के प्रमुख तत्व:** शास्त्रों एवं मनीषियों के मतानुसार सनातन धर्म के मूल तत्व इस प्रकार हैं: (1) मनुष्यता, (2) विश्व बन्धुता, (3) समावेशिता, (4) सह—अस्तित्व में विश्वास, (5)

सहनशीलता, (6) अहिंसा, (7) क्षमाशीलता, (8) करुणा, (9) सत्य का अनुसरण, (10) आचार—विचार की पवित्रता, (11) अपरिग्रह, (12) भोगवाद के प्रति अनासक्ति, (13) प्रकृति एवं जीव मात्र के प्रति सौहार्द, (14) ज्ञान का सृजन एवं उसका विस्तार, (15) तप, (16) विनम्रता, (17) परोपकारिता, (18) आध्यात्मिकता, (19) ईश्वर में आस्था, (20) पुनर्जन्म में आस्था, (21) आत्मा की अमरता एवं (22) मोक्ष।

5. **भारतीय संस्कृति के प्रमुख तत्व:** सनातन धर्म की ही भांति भारतीय संस्कृति के प्रमुख तत्व एवं उसकी शिक्षायें इस प्रकार हैं: (1) विश्व बन्धुता अथवा वसुधैव कुटुम्बकम्, (2) जीवन की अमरता, (3) करुणा, (4) सहनशीलता, (5) सह—अस्तित्व में विश्वास, (6) अहिंसा, (7) क्षमाशीलता, (8) सत्य का अनुसरण, (9) आचार—विचार की पवित्रता, (10) अपरिग्रह, (11) भोगवाद के प्रति अनासक्ति, (12) प्रकृति एवं जीव मात्र के प्रति सौहार्द, (13) ज्ञान का सृजन एवं उसका विस्तार, (14) विनम्रता, (15) परोपकारिता, (16) सुःख—दुःख के प्रति समभाव, (17) माता, पिता, गुरु, अतिथि एवं बड़ों के प्रति आदर का भाव, (18) आध्यात्मिकता।

अयं बन्धुरयं नेति गणना लघुचेतसाम्।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥ (महोपनिषद्)

6. **हिन्दू धर्म में पूजा एवं उपासना की स्वतंत्रता:** जहां तक हिन्दुओं में पूजा एवं उपासना का प्रश्न है, उस सम्बन्ध में हिन्दू धर्म पूरी तरह उदार और विशाल है। हिन्दू धर्म में समय—समय पर अनेक मत व पन्थ बनते रहे हैं। अलग—अलग मतों और पन्थों से सम्बद्ध हिन्दू अपने—अपने मत प्रवर्तक तथा पथ प्रवर्तक के निर्देशानुसार अपने आराध्य की उपासना करते रहे हैं। कौन किसकी और किस प्रकार पूजा करे, यह वैयक्तिक विषय मान लिया गया। हिन्दू धर्म की यह विशिष्टता आगे चलकर उसकी शक्ति और कमजोरी दोनों साबित हुई हैं। हिन्दुओं में आराध्यों की संख्या, उनके स्वरूप तथा उनकी उपासना की पद्धति व तरीके को लेकर

एकरूपता नहीं होने के कारण हिन्दुओं के धार्मिक एवं सांस्कृतिक एकीकरण की समस्या भी उत्पन्न हुई। स्वयं भारतीय दर्शन भी 'षड्दर्शन' के रूप में जाना जाता है। वैदिक एवं उत्तर वैदिक काल से ही भारत के दार्शनिक मनीषियों में दर्शनशास्त्र को ही लेकर मत मतान्तर रहा है। पुराणोत्तर काल से अवतारवाद एवं भक्तिमार्ग के जोर पकड़ने पर दर्शन से उद्भूत ज्ञानमार्ग कमजोर होता गया और सनातन धर्म जो मूलतः ज्ञानमार्गी था, वह भक्तिमार्गी होता गया और अनेकानेक देवी, देवता हिन्दुओं के उपास्य एवं आराध्य के रूप में स्थान पाते गये। आज तक हिन्दू धर्म के अनुयायी इसी रूप में अपने-अपने आराध्य की उपासना अपने-अपने तरीकों से करते आ रहे हैं। शास्त्रों के अनुसार हिन्दू सभ्यता, संस्कृति एवं धर्म में कोई एक अकेला ऐसा ऋषि अथवा ग्रन्थ नहीं है जिसकी कही हुई बात अंतिम रूप से प्रामाणिक मानी जावे, यद्यपि कि वेदों की सर्वोच्चता समस्त हिन्दुओं में सर्वस्वीकार्य रही है।

तर्कोऽप्रतिष्ठः श्रुतयो विभिन्ना
 नैको ऋशिः यस्य मतं प्रमाणम् ।
 धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायाम्
 महाजनो येन गतः स पन्थाः ॥ (महाभारतः अरण्यपर्वः 3.314-319)

7. **मानवरूप में जन्में गुरुओं की आराध्य के रूप में पूजा का औचित्य :** भारतीय दर्शन की दृष्टि से मनुष्य सहित प्रत्येक जीव ईश्वर का अंश है। जो अनक्षर तत्त्व ईश्वर में है, वही जीव में हैं। ईश्वर पूर्ण हैं, अतएव ईश्वर में से निकलने वाला कोई भी पिण्ड, अंश अथवा जीव भी पूर्ण हैं। शास्त्रों ने इस ब्रह्माण्ड अथवा जगत् को ही ईश्वर का स्वरूप माना है। इसीलिए गोस्वामी तुलसीदास जी ने इस संसार को अपने आराध्य (राम और सीता) का स्वरूप मानते हुए अपने दोनों हाथ जोड़कर संसार को ही प्रणाम किया है। शास्त्रों के अनुसार इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड अथवा संसार में केवल और केवल एक ही तत्त्व है, और वह है "ब्रह्म" अर्थात् ईश्वर। बाल्मीकि कृत "योगवाशिष्ठ" के अनुसार इस संसार में जो कुछ भी उत्पन्न होता है, वह ब्रह्म हैं, ब्रह्म से इतर इस संसार में कुछ भी उत्पन्न नहीं

होता हैं। अथर्ववेद के अनुसार इस संसार में गुरु के समान अथवा गुरु से बड़ा कोई दूसरा तत्व नहीं हैं जिसका अर्थ है कि गुरु ही ब्रह्माण्ड स्वरूप अर्थात् भगवान का स्वरूप होता हैं। अतएव यदि गुरु की पूजा कोई भगवान के रूप में अथवा अपने आराध्य के रूप में करता है तो उसे भारतीय दर्शन एवं शास्त्रों की दृष्टि से अनुचित कैसे कहा जा सकता हैं। यदि कोई हिन्दू अपने किसी गुरु अथवा शिर्डी साई की पूजा अपने आराध्य, उपास्य अथवा गुरु के रूप में करता है तो उसे भी अनुचित कैसे कहा जा सकता हैं।

अहं ब्रह्मास्मि। (वृहदारण्यक उपनिषद्)

तत्त्वमसि। (छान्दोग्य उपनिषद्)

सर्वं खल्वमिदं ब्रह्म यत्किञ्चित् जगत्यां जगत्॥ (छान्दोग्य उपनिषद्)

सियाराम मय सब जग जानी। करहुँ प्रनाम जोरि जुग पानी॥

ईश्वर अंश जीव अविनाशी, चेतन अमल सहज सुख रासी॥

(रामचरित मानस)

नास्ति गुरुसमं तत्त्वं, तत्त्वो नास्ति गुरोपरम्। (अथर्ववेद)

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्चित् जगत्यां जगत्। (ईशावास्योपनिषद्)

8. **गुरुओं को आराध्य मानने की परम्परा:** भारतीय संस्कृति में गुरुओं को सदैव सर्वोच्च सम्मानजनक स्थान दिया जाता रहा है। काल प्रवाह के साथ सनातन धर्म अथवा हिन्दू धर्म अनेकानेक गुरुओं व ज्ञानियों द्वारा बताये गये मतों व पन्थों में बंट गया। हिन्दू समुदाय भी इन्हीं गुरुओं और ज्ञानियों का अनुयायी बनकर अनेकों मतों और पन्थों में बंटता चला गया। इस प्रकार हिन्दू समुदाय किसी एक उपास्य व आराध्य का अनुयायी न होकर अनेकों प्रकार के गुरुओं के मतों व पन्थों में बंट गया और उनके द्वारा बताई गई उपासना पद्धति को अपना लिया। कई गुरुओं के अनुयायी अपने गुरु को ही आराध्य अथवा भगवान मानकर उनकी पूजा, आरती, उपासना व स्मरण करते हैं। इनमें से कई गुरुओं की भजन व आरती भी उनके अनुयायियों ने बना ली है और हिन्दुओं के विभिन्न ग्रन्थों में दिये गये भजन एवं आरती आदि के स्थान पर वह अपने-अपने गुरु की ही भजन और आरती गाते हुए उनकी पूजा

करते हैं। कतिपय प्रमुख गुरु जिनके नाम से मत और पन्थ बने, उनकी सूची इस प्रकार है:

(1) ज्ञान मार्गी	(23) नाग (नगा)
(2) भक्ति मार्गी	(24) महेश्वर
(3) रामानन्दी	(25) कापालिक
(4) शैव	(26) पाशुपत
(5) वैष्णव	(27) नाथ
(6) बौद्ध	(28) ब्रह्मकुमारी
(7) शाक्त	(29) निम्बार्क मत का सखी सम्प्रदाय
(8) स्मार्त	(30) बाबा रामपाल
(9) गाणपत	(31) सत्य साईं
(10) सौर	(32) शिरडी साईं
(11) कबीर पन्थी	(33) डा० बी.आर. अम्बेकडकर
(12) आर्य समाजी	(34) सन्तोषी मां
(13) राम कृष्ण मिशन	(35) राधे मां
(14) श्री श्री रविशंकर	(36) मां अमृता आनन्दमयी
(15) सद्गुरु	(37) निर्मल बाबा
(16) शान्तिकुन्ज गायत्री परिवार	(38) नीम करोड़ी बाबा
(17) जय गुरुदेव	(39) बागेश्वर बाबा
(18) ओशो	(40) शोभन सरकार
(19) राम-रहीम	(41) आसाराम बापू
(20) स्वामी नारायण सम्प्रदाय	(42) राम लाल जी सियाग
(21) अघोर	(43) मजार
(22) दशनामी	(44) दरगाह

- 9. सनातनधर्म के उद्धार में आदि शंकराचार्य की भूमिका:** महात्मा बुद्ध द्वारा प्रवर्तित बौद्ध धर्म के उपरान्त भारत के समस्त राजा एवं प्रजा एक समय में बौद्ध मत के अनुयायी हो गये थे। वेद एवं सनातन धर्म उपेक्षित हो गये थे। आदि शंकराचार्य (788-820 ई०) ने बौद्ध विद्वानों से कई वर्षों तक शास्त्रार्थ किया और दार्शनिक स्तर पर उन्हें पराजित किया तथा वेदों और सनातन धर्म की सर्वोच्चता को पुनर्स्थापित किया। आदि शंकराचार्य जी ने महात्मा बुद्ध को भी

सनातन धर्म में एक उपास्य के रूप में न केवल स्वीकार किया अपितु बिहार राज्य के गया में सनातन धर्म के त्रिदेव—ब्रह्मा, विष्णु, महेश के साथ महात्मा बुद्ध की भी प्रतिमा की स्थापना की और सनातन धर्म के अनुयायियों को यह निर्देश दिया कि पितरों की आत्मा की सदा के लिये मुक्ति हेतु प्रत्येक सनातन धर्मी को गया जाकर पिण्डदान करना चाहिए और ब्रह्मा, विष्णु, महेश के साथ-साथ महात्मा बुद्ध की भी पूजा करनी चाहिए। आदि शंकराचार्य ने इस प्रकार न केवल सनातन धर्म का फिर से उद्धार किया अपितु वेदों और सनातन धर्म के विरोधी रहे महात्मा बुद्ध को भी सनातन धर्म में आत्मसात कर लिया। वर्तमान समय में जब शिर्डी साईं की पूजा हिन्दू समुदाय के बड़े वर्ग में वर्षों से हो रही है और हिन्दू समुदाय ने अपने उपास्य के रूप में शिर्डी साईं को स्वीकार कर लिया है तो शिर्डी साईं की पूजा को लेकर कोई नया विवाद खड़ा करना किस प्रकार उचित हो सकता है, विशेषकर तब जब हिन्दू धर्म के अनुयायी अनेकानेक मतों, पन्थों और सम्प्रदायों में पहले से ही बंट चुके हैं। शिर्डी साईं की पूजा आज से लगभग 100 वर्ष पूर्व 1922 ई० में महाराष्ट्र के शिर्डी में जब प्रारम्भ हुई थी तब उसी समय उसका विरोध उस समय के हिन्दू धर्माचार्यों द्वारा तथा उसके बाद पूज्य शंकराचार्य स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा क्यों नहीं किया गया। शिर्डी साईं के मन्दिर न केवल भारत के बहुतेरे नगरों, उपनगरों और गांवों में अब तक बन चुके हैं अपितु बड़ी संख्या में हिन्दुओं के घरों में भी शिर्डी साईं के चित्र व उनकी मूर्ति आराध्य के रूप में रख उठी हैं। फिर अब कतिपय हिन्दू धर्माचार्यों द्वारा शिर्डी साईं की पूजा का विरोध किये जाने का औचित्य क्या रह जाता है?

10. **भारतीय संविधान में उपासना की स्वतंत्रता:** भारत के संविधान का अनुच्छेद 25 प्रत्येक नागरिक को इस आशय का मौलिक अधिकार प्रदान करता है कि वह अपनी पसंद के धर्म, उपास्य एवं उपासना पद्धति का चयन कर सके। फिर कौन किसे यह कहने का अधिकार रखता है कि कौन किसकी पूजा करे और किसकी न करे। जहां तक इस विवाद का प्रश्न है कि शिर्डी साईं मुसलमान थे अथवा कुछ और, उस संबंध में हिन्दू धर्म का उसके धर्माचार्यों द्वारा कुप्रबन्धन, हिन्दू धर्माचार्यों के मध्य मतैक्य का अभाव, हिन्दू धर्म की

रक्षा एवं उसके विस्तार के प्रति उदासीनता न केवल सांई की पूजा हिन्दुओं में प्रारम्भ होने के लिए जिम्मेदार है अपितु हिन्दुओं का अनेकानेक मतों व पन्थों में लगातार विभाजित होते चले जाना भी कारण हैं। वर्तमान समय में जब हिन्दू समुदाय के विरुद्ध कट्टर इस्लाम की आक्रामक नीतियाँ तथा ईसाइयत द्वारा हिन्दुओं के धर्मान्तरण का अभियान तेज गति से चल रहा हो तो ऐसे में शिर्डी सांई की हिन्दुओं द्वारा उपासना का विवाद पैदा किया जाना किसी भी दृष्टि से न तो सनातन धर्म के हित में है और न ही उसके अनुयायी हिन्दुओं के हित में। हिन्दू समुदाय एवं हिन्दू धर्म का हित वर्तमान में इसी में निहित है कि हिन्दू अपने आन्तरिक मतभेदों को महत्व न देकर एकजुट हों और विधर्मियों के आक्रामक एवं विघटनकारी अभियानों को रोकें।
